पाठ -5 औरतों ने बदली दुनिया

www.evidyarthi.in

https://www.evidyarthi.in/

कक्षा VII पाठ 5 औरतों ने बदली दुनिया (NCERT)

www.evidyarthi.in

- परिचय
- कम अवसर और कठोर अपेक्षाएँ
- परिवर्तन के लिए सीखना

- वर्तमान समय में शिक्षा और विद्यालय
- महिला आंदोलन
- अभियान

https://www.evidyarthi.in/

कक्षा VII पाठ 5 औरतों ने बदली दुनिया (NCERT)

www.evidyarthi.in

- जागरूकता बढ़ाना
- विरोध करना
- बंधुत्व व्यक्त करना

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

परिचय

पिछले अध्याय में, हमने देखा कि कैसे घर में महिलाओं के द्वारा किया जाने वाले काम को, काम के रूप में मान्यता नहीं दी जाती है। हमने यह भी पढ़ा कि कैसे घर का काम

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

करना और परिवार के सदस्यों की देखभाल करना एक पूरे समय का काम है और इस काम को प्रारम्भ और समाप्त करने का कोई निश्चित समय भी नहीं है।

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

इस अध्याय में, हम घर के बाहर के काम को देखेंगे, और समझेंगे कि कैसे कुछ व्यवसायों को महिलाओं की तुलना में पुरुषों के लिए अधिक उपयुक्त माना जाता है।

https://www.evidyarthi.in/

हम यह भी जानेंगे कि कैसे महिलाएं समानता के लिए संघर्ष करती हैं। शिक्षा प्राप्त करना महिलाओं के लिए नए अवसर पैदा करने का एक तरीका था और अब भी है।

www.evidyarthi.in
https://www.evidyarthi.in/

कक्षा VII पाठ 5 औरतों ने बदली दुनिया (NCERT)

www.evidyarthi.in

यह अध्याय में, हाल के वर्षों में भेदभाव को चुनौती देने के लिए महिला आंदोलन द्वारा किए गए विभिन्न प्रकार के प्रयासों का भी संक्षेप में वर्णन करेंगे।

https://www.evidyarthi.in/

कम अवसर और कठोर अपेक्षाएँ

- बहुत से लोगों को लगता है कि महिलाएं केवल कुछ खास तरह की नौकरियों के लिए ही फिट हैं- जैसे नर्स के रूप में । वे तकनीकी नौकरियों के लिए उपयुक्त नहीं हैं।

www.evidyarthi.in

https://www.evidyarthi.in/

- कई लड़कियों को डॉक्टर और इंजीनियर बनने के लिए पढ़ाई और प्रशिक्षण के लिए लड़कों के समान समर्थन नहीं मिलता है।

https://www.evidyarthi.in/

- ज्यादातर परिवारों में, महिलाओं को सिखाया जाता है कि स्कूल के बाद उनकी शादी करनी है। हालाँकि, लक्ष्मी लकड़ा ने इस रूढ़िवादी धारणा को तोड़ दिया, जब वह

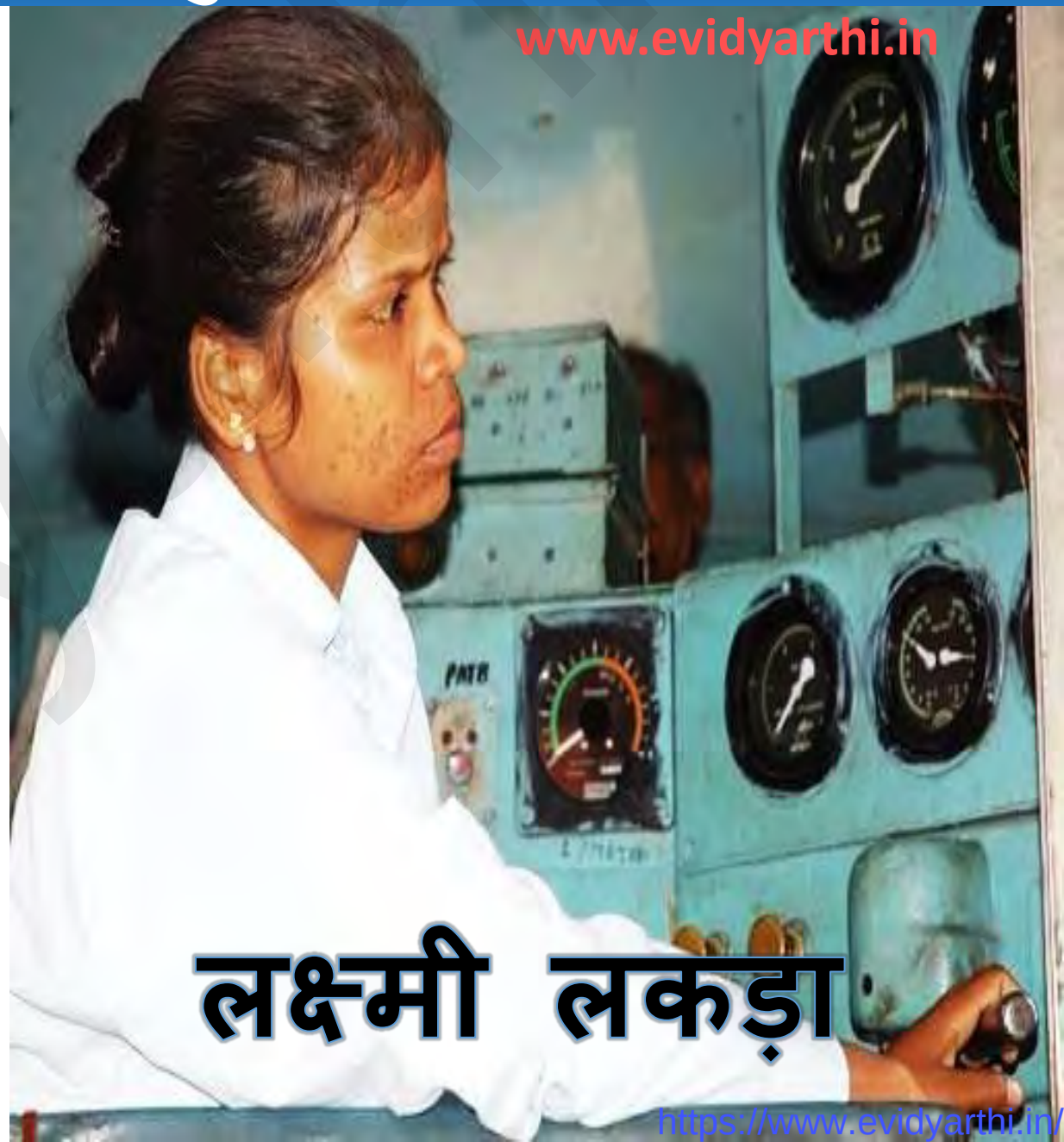

www.evidyarthi.in

उत्तर रेलवे की पहली महिला इंजन ड्राइवर बनीं।

- हम एक ऐसे समाज में रहते हैं जिसमें सभी बच्चे अपने आसपास की दुनिया के दबावों का सामना करते हैं।

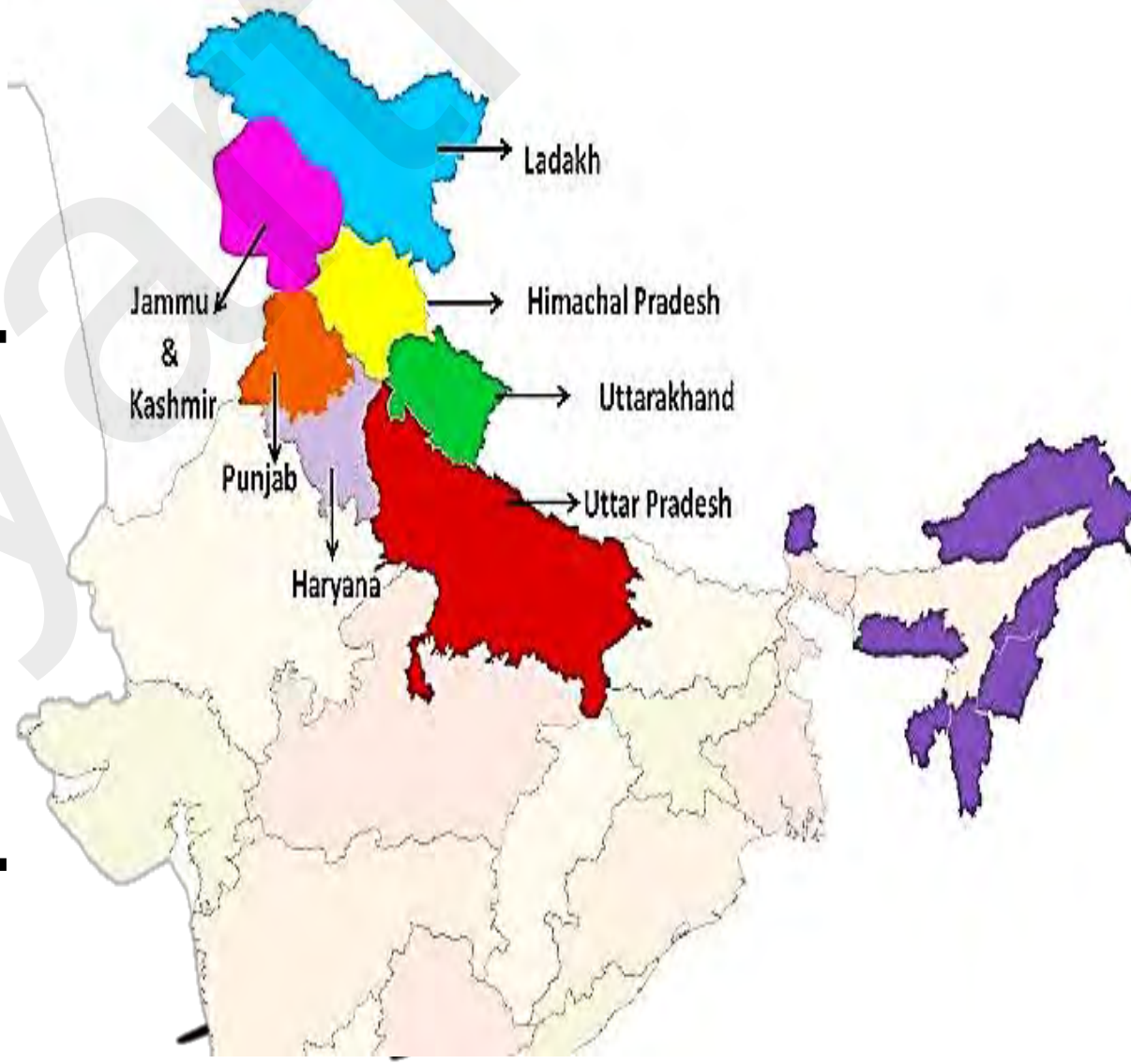

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

लड़कों पर नौकरी पाने के बारे में सोचने के लिए दबाव डाला जाता है जिससे अच्छी तनख्वाह मिलेगी। अन्य लड़कों की तरह व्यवहार नहीं करने पर उन्हें चिढ़ाया और धमकाया भी जाता है।

https://www.evidyarthi.in/

परिवर्तन के लिए

- आज हमारे लिए यह कल्पना करना भी कठिन है कि कुछ बच्चों के लिए स्कूल जाना और पढ़ना "पहुँच के बाहर" की बात या "अनुचित" बात भी मानी जा सकती है।

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

- परन्तु अतीत में, पढ़ना और लिखना कुछ ही लोग जानते थे। अधिकांश बच्चे वही काम सीखते थे जो उनके परिवार में होता था या उनके बुजुर्ग करते थे।

https://www.evidyarthi.in/

कक्षा VII पाठ 5 औरतों ने बदली दुनिया (NCERT)

- उन समुदायों में जहाँ बेटों को पढ़ना और लिखना सिखाया जाता था, वहां बेटियों को वर्णमाला तक सीखने की अनुमति नहीं थी। जिन परिवारों में मिट्टी के बर्तन, बुनाई और शिल्प जैसे कौशल

www.evidyarthi.in

https://www.evidyarthi.in/

सिखाए जाते थे, वहां भी बेटियों और महिलाओं के योगदान को केवल सहायक के रूप में देखा जाता था।

- इससे पहले लड़कियों की शिक्षा को लेकर काफी विरोध हुआ।

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

- लेकिन उन्नीसवीं सदी में, शिक्षा के बारे में कई नए विचारों ने जन्म लिया, स्कूल अधिक प्रचलन में आ गए और वे समाज, जिन्होंने स्वयं कभी

https://www.evidyarthi.in/

पढ़ना लिखना नहीं सीखा था, अपने बच्चों को स्कूल भेजने लगे।

- 1890 के दशक में, रमाबाई ने महिलाओं की शिक्षा का समर्थन किया।

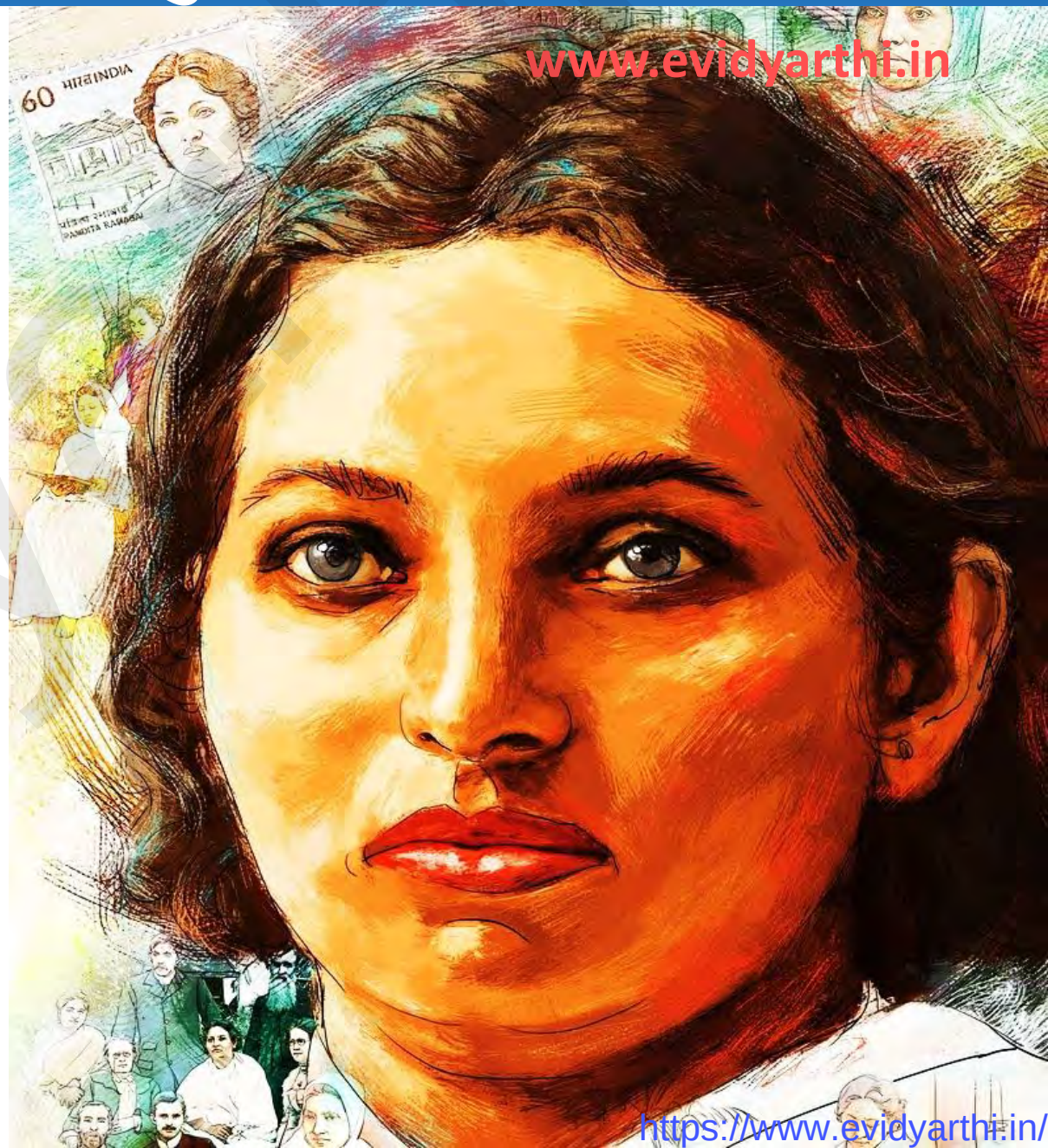

www.evidyarthi.in
https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

- रोकैया सखावत हुसैन ने पारिवारिक विरोध के बावजूद अपने बड़े भाई और एक बड़ी बहन से अंग्रेजी सीखी और एक प्रसिद्ध लेखिका बन गईं।

https://www.evidyarthi.in/

रोकैया सखावत हुसैन

www.evidyarthi.in

Sultana's Dream

begum rokheya sakhawat hossain

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

- रासुंदरी देवी एक धनी जमींदार के परिवार की गृहिणी थीं। उस समय यह माना जाता था कि अगर कोई महिला पढ़ना-लिखना सीख जाती है, तो वह अपने पति के लिए दुर्भाग्य

https://www.evidyarthi.in/

“आमार जीबोन”

1876

रासुंदरी देवी

www.evidyarthi.in

https://www.evidyarthi.in/

लेकर आती है और विधवा हो जाती है। करीब 200 साल पहले 60 साल की उम्र में उन्होंने बांग्ला में अपनी आत्मकथा लिखी थी।

www.evidyarthi.in
https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

"आमार जीबोन" नामक उनकी पुस्तक किसी भारतीय महिला द्वारा लिखित पहली आत्मकथा है।

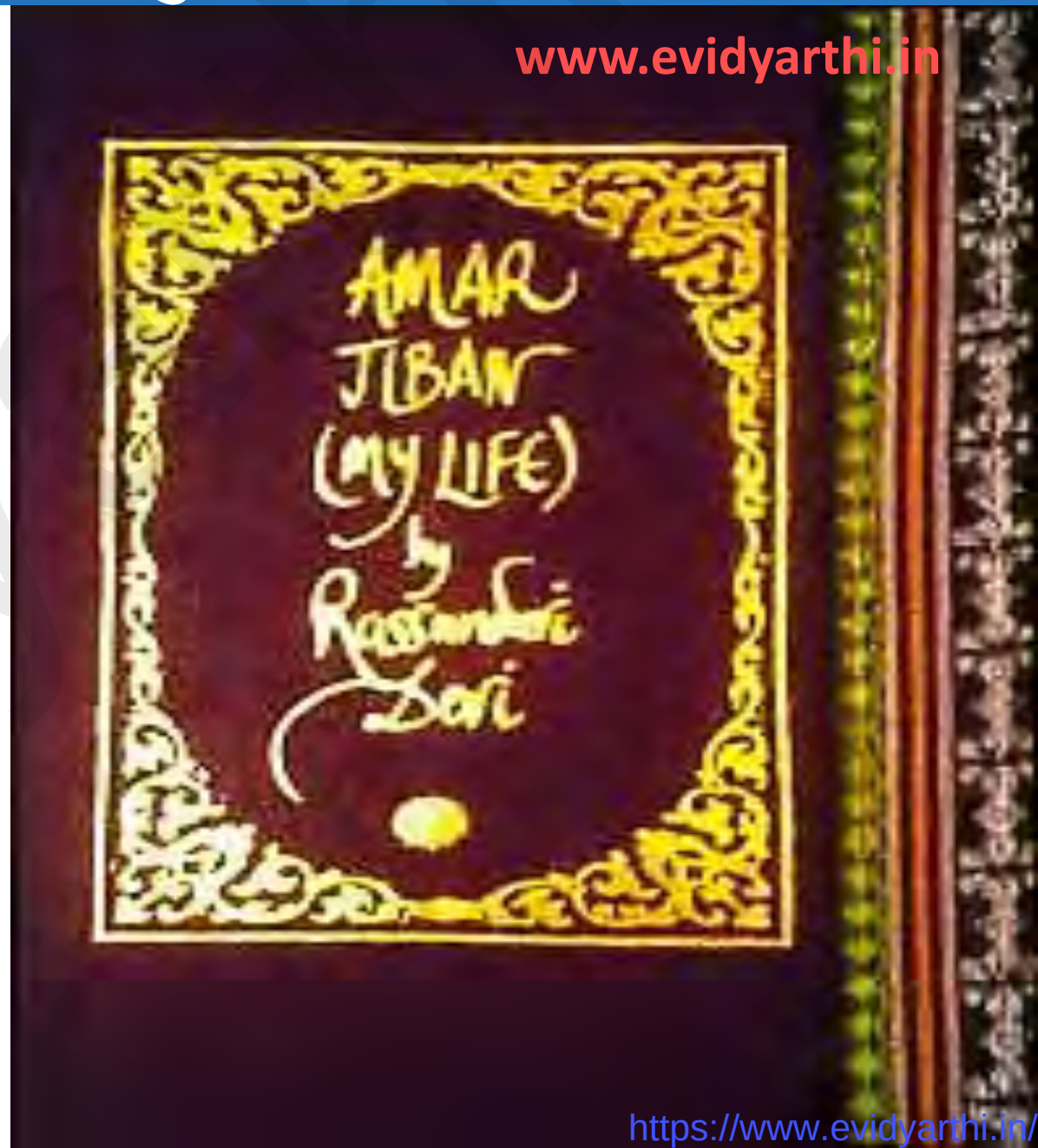

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

वर्तमान समय में शिक्षा और

- आज लड़के और लड़कियां दोनों बड़ी संख्या में स्कूल जाते हैं।
- लड़के और लड़कियों की शिक्षा में अभी भी अंतर है।

https://www.evidyarthi.in/

स्कूल जा रही लड़की

www.evidyarthi.in

https://www.evidyarthi.in/

- 1961 की जनगणना के अनुसार, सभी लड़कियों और महिलाओं के केवल 15 प्रतिशत की तुलना में सभी लड़कों और पुरुषों (7 वर्ष और

www.evidyarthi.in

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

अधिक उम्र के) में लगभग 40 प्रतिशत साक्षर थे।

➢2011 की जनगणना में, ये आंकड़े लड़कों और पुरुषों के लिए 82 प्रतिशत और लड़कियों और महिलाओं के लिए 65 प्रतिशत हो गए हैं।

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

भारत में साक्षरता दर, 1951-2011

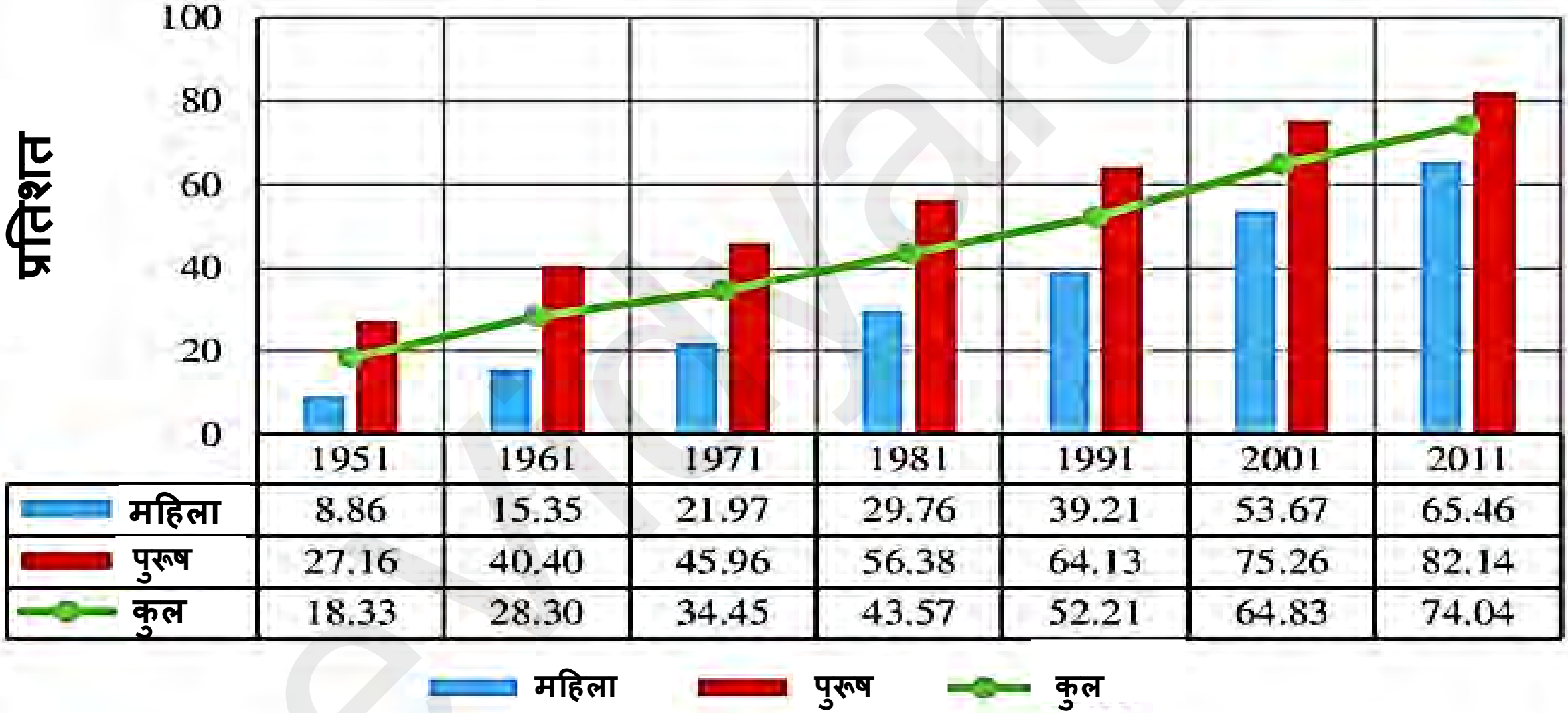

	1951	1961	1971	1981	1991	2001	2011
महिला	8.86	15.35	21.97	29.76	39.21	53.67	65.46
पुरूष	27.16	40.40	45.96	56.38	64.13	75.26	82.14
कुल	18.33	28.30	34.45	43.57	52.21	64.83	74.04

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

- अब भी स्त्रियों की तुलना में पुरूषों का प्रतिशत अधिक है।
- अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की लड़कियों की स्कूल छोड़ने की दर अधिक हैं।

https://www.evidyarthi.in/

अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की लड़कियां

www.evidyarthi.in

https://www.evidyarthi.in/

2011 की जनगणना में यह भी पाया गया कि दलित और आदिवासी लड़कियों की तुलना में मुस्लिम लड़कियों के प्राथमिक स्कूल पूरा करने की संभावना और भी कम रहती है।

महिला आंदोलन

- परिवर्तन लाने के लिए महिलाओं ने व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से संघर्ष किया है।

www.evidyarthi.in
https://www.evidyarthi.in/

इसे महिला आंदोलन कहा जाता है।

- कई पुरुष भी महिला आंदोलन का समर्थन करते हैं।

www.evidyarthi.in
https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

- देश के विभिन्न हिस्सों से अलग-अलग महिलाएं और महिला संगठन इस आंदोलन का हिस्सा हैं।
- जागरूकता फैलाने, भेदभाव से लड़ने और न्याय पाने के लिए विभिन्न

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

रणनीतियों का इस्तेमाल किया गया है।

- इनकी कुछ झलकियों को हम अगले वीडियो में समझेंगे।

https://www.evidyarthi.in/

अभियान

- अभियानों ने नए कानून भी पारित किए हैं। अपने घरों में शारीरिक और मानसिक हिंसा का सामना करने वालों के लिए 2006 में एक

www.evidyarthi.in

https://www.evidyarthi.in/

कानून बनाया गया, जिसे घरेलू हिंसा भी कहा जाता है।

- सुप्रीम कोर्ट ने 1997 में कार्यस्थल, शैक्षणिक संस्थानों आदि में महिलाओं

https://www.evidyarthi.in/

को यौन उत्पीड़न से बचाने के लिए दिशा-निर्देश तैयार किए।

- 1980 के दशक में, देश भर में महिला समूहों ने 'दहेज मौतों' के खिलाफ आवाज

https://www.evidyarthi.in/

उठाई - अधिक दहेज के लिए युवा दुल्हनों की उनके ससुराल वालों, पतियों द्वारा हत्या कर दी गई।

- वे अदालतों, मीडिया आदि के पास सड़कों पर उतर आए।

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

यह समाचार पत्रों और समाज में एक सार्वजनिक मुद्दा बन गया और दहेज मांगने वाले परिवारों को दंडित करने के लिए दहेज कानूनों को बदल दिया गया।

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

दहेज कानून

दहेज निषेध अधिनियम, 1961 (20 मई, 1961)

1. दहेज देने या लेने पर जुर्माना।
2. दहेज मांगने पर जुर्माना।
3. दहेज देने या लेने का करार शून्य हो जाएगा।

https://www.evidyarthi.in/

जागरूकता बढ़ाना

- महिला आंदोलनों का संदेश नुक्कड़ नाटकों, गीतों और जनसभाओं के माध्यम से फैलाया गया।

www.evidyarthi.in
https://www.evidyarthi.in/

विरोध करना

महिलाओं के खिलाफ उल्लंघन होने पर महिला आंदोलन अपनी आवाज उठाता है।

www.evidyarthi.in
https://www.evidyarthi.in/

बंधुत्व व्यक्त

महिला आंदोलन अन्य महिलाओं और कारणों के साथ एकता दिखाने के बारे में भी है।